IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# भारत में उच्च शिक्षा की समस्याओं का एक अध्ययन

**अनुराज**

**स्नातकोत्तर (शिक्षा)**

**सारांशः–** प्राचीन काल में आर्यों ने अपनी शिक्षा प्रणाली को अत्यंत उच्चकोटि तक पहुँचा दिया था। प्राचीन काल में आश्रम और परिषदें उच्च शिक्षा के केन्द्र थे। वैदिक युग से ही कुरू, पांचाल, विदेह, काशी, तक्षशिक्षा आदि में उच्च शिक्षा के केन्द्र स्थापित हो चुके थे। बौद्ध युग में अनेक बौद्ध–विहार उच्च शिक्षा केन्द्रों के रूप में विकसित हो गए। बौद्ध–विहारों की संगठित शिक्षा व्यवस्था को ही आधुनिक पाश्चातय विश्वविद्यालय व्यवस्था की जननी मानना चाहिए। मध्ययुग में भी नवदीप और मिथिला आदि हिंदू शिक्षा के केन्द्र थे। मुस्लिम शिक्षा काल में मदरसा कॉलेज का समकक्ष था तथा प्रमुख स्थानों पर मदरसे विश्वविद्यालय के ही रूप थे। वर्तमान उच्च शिक्षा का विकास ब्रिटिश काल से माना जाता है। इस काल में समय–समय पर अनेक आयोग/समितियों का गठन किया गया और शिक्षा को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया। स्वतंत्रता पश्चात् भी अनेक आयोजन/समितियों का गठन किया गया। वुड डिस्पैच आयोग (1854 ई०) के सुझाव पर 1857 ई० में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास में तीन विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई थी। 1948–49 राधा कृष्णन आयोग, 1964–66 कोठारी आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों (1968, 1986, 2020) के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में विकास किया जा रहा है। परंत उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विकास के समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिससे विकास की गति बाधित हो जाती है।

**बीज शब्दः–** आश्रम, विश्वविद्यालय, बौद्ध–विहार, मदरसा, आयोग, बाधित, पाश्चात्य।

## उच्च शिक्षा की समस्याएँः–

1. **उद्देश्य विहीनताः–** भारतीय उच्च शिक्षा भी माध्यमिक शिक्ष के समान उद्देश्यविहीन है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को जीविकोपार्जन के लिए तैयार नहीं करती। उच्च शिक्षा उन्हें केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करती हैं। एक निश्चित व्यावहारिक दिशा में अग्रसर नहीं करती। परिणामस्वरूप बहुत से विद्यार्थियों की योग्यता, कुशलता एवं विशेष गुणों के लाभों से देश वंचित रह जाता है।
2. **विश्वविद्यालय शिक्षा में शासन का अनुचित हस्तक्षेपः–** भारतीय विश्वविद्यालयों का प्रशासन सही ढंग से नहीं चलाया जा रहा है। आजकल अपनाई गई सरकारी नीति के अनुसार केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा विश्वविद्यालयों के विषयों में अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप किया जा रहा है। इन सब के काराण विश्वविद्यालयों का प्रशासन अनेक समस्याओं से घिर जाता है। भारतीय विश्वविद्यालयो में आंतरिक स्वतंत्रता के अभाव, अनावश्यक बाह्य प्रभावों, षडयंत्र आदि की उत्पति होती है और शिक्षा का स्तर गिरने लगता है।
3. **प्रवेश संबंधी समस्याएँः–** आज भारतीय विश्वविद्यालयों एवं उनसे संबंध कालेजों में प्रवेश की कठिनाइयाँ भी बढ़ती जा रही है। प्रवेश की कठिनाइयों के कारण बहुत से योग्य एवं उच्च शिक्षा के इच्छुक छात्रों को निराश होना पड़ता है। परिणामस्वरूप उनकी भविष्य योजनाओं में बाधा पड़ती है। भारतीय विश्वविद्यालयों को प्रवेश–पद्वति में भी एकरूपता नहीं है। जिसके प्रभावस्वरूप बहुधा ऐसे उदाहरण पाए जाते हैं जब सामान्य छात्रों को विश्वविद्यालयों में प्रवेश प्राप्त हो जाता हे और अच्छे एंव अध्यवसायी छात्र इससे वंचित रह जाते हैं।
4. **दोषपूर्ण परीक्षा प्रणालीः–** भारतीय विश्वविद्यालयों की परीक्षा प्रणाली अनेकों दोषों से युक्त है। विश्वविद्यालय परीक्षाएँ, विद्यार्थियों की योग्यताओं का सही मूल्यांकन करने में असफल रहते हैं। वर्ष भर में होने वाली निबन्धात्मक परीक्षाओं में सफलता के आधार पर विद्यार्थियों को कक्षोन्नति प्राप्त होती है। इस प्रकार आज की वार्षिक विश्वविद्यालिय निबन्धात्मक परीक्षाएँ भी विद्यार्थियों की योग्यता की सही परख करने के अपने उद्देश्य में असफल रही हैं।
5. **शिक्षा का माध्यमः–** अंग्रेजी भारत को स्वतंत्र हुए इतने वर्षों पश्चात् भी उच्च शिक्षा के विद्यालयों में मुख्य रूप से अंग्रेजों भाषा ही शिक्षा का माध्यम है। कुंजरू समिति ने यह प्रस्तावित किया था कि प्रचलित अंग्रेजी भाषा को परिवर्तित करके माध्यम के रूप में राष्ट्रभाषा हिन्दी अथवा कोई अन्य भारतीय भाषा अपनाई जाए। किंतु अंग्रेजी भाषा के समर्थक उसे ही शिक्षा का माध्यम बनाए रखना चाहते हैं। अंग्रेजी में विचार अभिव्यक्ति के कारण भारतीय नवयुवकों का बहुत अहित हो रहा है।

ये भारतीय उच्च शिक्षा में प्रमुख समस्याएँ हैं। इन समस्याओं के कारण इस शिक्षा का प्रसार एवं विकास पूर्णरूपेण नहीं हो पा रहा है। भारत की लोकतन्त्रीय पद्वति की सफलता एवं देश के

सर्वमुखी विकास के लिए इन समस्याओं का समाधान करना आवश्यक हे। इनके निवारण के लिए कुछ उपयोगी सुझाव आगे प्रस्तुत हैं।

**उच्च शिक्षा की समस्याओं का समाधानः–**

1. **उद्देश्यों में परिवर्तनः–** भारत की उच्च शिक्षा समस्याओं में शिक्षा कार्य लक्ष्यहीन है। यह विद्याार्थियों को किसी निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं करती है। इसलिए उच्च शिक्षा वर्तमान में अव्यावहारिक एवं व्यर्थ सिद्ध होती है। उच्च शिक्षण संस्थाओं को अपनी सफलता के लिए अपने वर्तमान पुस्तकीय लक्ष्य को शीघ्रातिशीघ्र परिवर्तन करके व्यावहारिक उद्देश्यों को अपनाना चाहिए।
2. **विश्वविद्यालयों की स्वतंत्र व्यवस्थाः–** बहुमत इस बात का पोषक है कि विश्वविद्यालयों को निजी एवं आंतरिक विषयों में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए और केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों का अनावश्यक हस्तक्षेप समाप्त कर दिया जाए। विश्वविद्यालय अपने सभी विषयों पर स्वयं विचार और निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र रहे और अपने निश्चयों को क्रियान्वित करने में उन पर कोई अनुचित बाह्य दबाव न डाला जाए। विश्वविद्यालयों के स्वायत्त शासन पर सरकार का केवल कुछ ही नियंत्रण रहना चाहिए।
3. **राष्ट्रभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाएः–** उच्च शिक्षा को परिवर्तित भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप ढालनें के लिए यह भी अत्यंत अनिवार्य है कि अंग्रेजी को शिक्षा के माध्यम से पद से हटाकर संघीय भाषा हिन्दी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया जाए, जिससे देश के विभिन्न राजयों के निवासियों के मध्य सरलता से सम्पर्क स्थापित किया जा सकें तथा अखिल भारतीय सेवाओं की परीक्षा में सुविधा हो।
4. **सामाजिक सेवा संबंधी कार्यक्रमों का संचालनः–** विश्वविद्यालय शिक्षा में सामाजिक सेवा के कार्यक्रमों को सम्मिलित करना भी अत्यंत उपयोगी है। अमेरिका के समान भारत की प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्था में समाज सेवा का अभ्यास स्नातकीय कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग माना जाए और प्रत्येक छात्र से वर्ष में कुछ समय तक यह कार्य अनिवार्य रूप से कराया जाए।

**निष्कर्षः–** भारतीय उच्च शिक्षा में अनेक समस्याएँ हैं। इन समस्याओं के कारण इस शिक्षा का प्रसार एवं विकास पूर्णरूपेण नहीं हो पा रहा है। उच्च शिक्षा की समस्याओं के समाधान के लिए यदि उपरोक्त सुझावों को मान लिया जाए तो उच्च शिक्षा शीध्र ही समस्या मुक्त हो जाएगी तथा नवयुवक छात्रों के मानसिक, नैतिक, शारीरिक विकास में सहायक सिद्ध होगी। नवयुवकों का बहुमुखी करने के साथ उच्च शिक्षा उन्हें जीविकोपार्जन करने योग्य भी बनाएगी।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. Agrawal, V. (2014). Higher Education in India: Challenges and Opportunities. International Journal of Scientific Research, 3(1), 123-125.
2. Avhad, S. (2013). Emerging Issues and Challenges in Higher Education. Abhinav, II, 53-54.
3. Gupta G& N Gupta. (2012). Higher Education in India: Structure, Statistics and Challenges. Journal of Education and Practice, 3(2), 17-23.
4. Lall, M. (2005). The Challenges for India's Education System. Chatham Housse.
5. Mahajan, S. (2012) Some Issues in Higher Education. Economic & Political weekly 20, relvil (31), 20-23.
6. Sharma S & Sharma P. (2015). Indian Higher Education System: Challenges and Suggestions. Electronic Journal for Inclusive Education, 3(4), 1-4
7. Singh, J.D. (2013). Higher Education in India- Issues, Challenges and Suggestions.